

2. — 1) *fest überzeugt*: आत्मनः प्रतिज्ञयो ऽसौ लब्धः पतिरिति स्थिते (nom. du. f.) MBh. 1, 4140. Spr. (II) 868. *fest entschlossen*: अनतिक्रमणीयं मे सुकृदाक्यमिति स्थितो ऽस्मि Çāk. 22, 12. fg. तं विज्ञेयम् MBh. 5, 7140. रामप्रज्ञाने R. 2, 33, 13. रत्नोदये Vop. 5, 3. bereit zu (dat.): दानाय Jigñ. 2, 54. देहविमुक्तये Kumāras. 4, 39. = सत्प्रतिज्ञ Triak. = सप्रतिज्ञ H. an. = प्रतिज्ञातवत् Mhd. — m) *dastehend, daseiend, vorhanden, anwesend, gegenwärtig*: को ज्ञातु परमार्थं हि नारीं व्यालीमिव स्थिताम्। वासयेत्स्वगृहे MBh. 5, 7071. निवेद्यतां नैषधाय सर्वाः प्रकृतयः स्थिताः 3, 2266. न चित्तपति नः स्थितान् Hariv. 10215. स्थितो क्लेशः *da stehe ich, da bin ich* R. Gorr. 1, 56, 3. Rīgā-Tar. 4, 22. नौ so v. a. bereit stehend R. 2, 12, 69. स्थितं स्थितं कृत्ति गर्भम् jeden vorhandenen Suçr. 2, 297, 3. श्रुतो तस्करता स्थिता Ragh. 1, 27. अर्धरात्रिः *ist da, ist gekommen* R. Gorr. 1, 36, 14. zwischen अनागत und अतिक्रान्त Weber, Nax. 1, 312. सनात्या (so zu trennen) स्थितपान्यया M. 9, 87. एतानि शिल्पानि मयि स्थितानि *finden sich bei mir vor* so v. a. *ich kenne sie* MBh. 4, 292. अग्रवे स्थिते M. 3, 171. MBh. 1, 5968. R. 2, 23, 36. 102, 2. R. Gorr. 2, 20, 41. 3, 21, 7. 53, 59. 4, 38, 18. Kathās. 5, 4. 15, 131. 17, 20. 21, 117. 31, 81. 34, 51. 234. त्वयि स्थिते 42, 159. स्थितास्वप्युत्तराध्यामु प्राकप्राचीं याति किं नृपाः 18, 57. अतिमध्यदिने स्थिते M. 4, 140. 11, 218. — n) *Jmd gehörend*: राज्यं तव R. 2, 21, 14. — o) *gerichtet auf*: गगनतलं (दृष्टि-निपात) Varāh. Bhṣ. S. 28, 8. वृत्तिनिरोधे यत्नः Sarvadarśanas. 168, 21. — p) *stehend bei* so v. a. *beruhend auf, abhängig von* (loc.): यस्यां लोकाः प्रसूतिश्च स्थिता नित्यमथो मुखम् MBh. 1, 6139. जयाशा मे त्वयि स्थिता R. 6, 77, 4. सिद्धिस्तु देवे स्थिता Spr. (II) 4649. — q) *mit dat. zu Etwas dienend, — führend*: पीडनं धर्मानाशाय पापापापशते स्थितम् Spr. (II) 4204. — r) *übrig geblieben* Kumāras. 4, 27. Hit. 98, 16, v. l. — s) *der von Etwas abgestanden ist, — abgesehen hat* Spr. (II) 6986. Pañāt. 249, 17. — t) *nicht von इति begleitet* (im Padapāṭha) RV. Prāt. 10, 9. स्थितोपस्थित *mit und ohne* इति ebend. und 11, 15. 31, 15, 11. VS. Prāt. 1, 147, 4. 187. überh. *allein, — gesondert stehend*: स्थिते पदे so v. a. im Padapāṭha TS. Prāt. 20, 2; vgl. यथापुक्ताग्रथास्थितात्पदपाठात् Comm. zu 5, 2. — 2) n. a) *das Stillstehen, Stehenbleiben* Spr. (II) 4646. Art und Weise des Stehens R. 4, 12, 41. — b) *das Verharren auf dem rechten Wege* R. 2, 39, 24. — Vgl. डः, पतितः, मध्यः, यथाः, सकृः, सकृत्, सु.

स्थितता (von स्थित) f. *das Sichbefinden an einem Orte* Bhṣ. Āa. Up. 4, 1, 7. स्थितता Çat. Br.

स्थितधी adj. *festen Geistes* Bhag. 2, 56 (defin.).

स्थितपाद्य n. *in Prākṛit und in stehender Stellung gesprochene Worte eines von Liebe gequälten Weibes* Sāh. D. 504. 506.

स्थितप्रकरणा n. Ind. St. 1, 468 wohl nur fehlerhaft für स्थितिप्रकरणा.

स्थितप्रज्ञ adj. *von fester Erkenntnis* Bhag. 2, 55 (defin.).

स्थितप्रेमन् adj. *treu an Jmd hängend* Çardārthak. bei Wilson. — Vgl. स्थिरप्रेमन्.

स्थितबुद्धित m. N. pr. eines Buddha Lalit. ed. Calc. 5, 15. fg.

स्थितवत् (von स्थित) adj. *die Wurzel sthā enthaltend* Çat. Br. 6, 8, 14.

स्थिति (von 1. स्था) f. = स्थान AK. 3, 4, 18, 120. H. an. 2, 206. Mhd. t. 70. Halā. 5, 51. = आस्था, आसना AK. 3, 3, 21. H. 1498. = अवस्था दशा H. 1377. = अवस्थान Mhd. = व्यवस्था Halā. = मर्यादा AK. 2, 8,

1, 26. Triak. 3, 3, 191. H. 744. Mhd. = सीमन् H. an. Mhd. = काष्ठा AK. 3, 4, 10, 43. = निवेश, रचना H. 1499. 1) *das Stehen, Stillstehen*: स्थितिमाचरेः *bleibe stehen* Ragh. 1, 89. क्त्वा ऽभवल्लवणोत्से मे दिनात्ते आम्प-तः स्थितिः *ich machte Halt* Rīgā-Tar. 6, 16. *das Aufrechtstehen* Suçr. 2, 148, 3. — 2) *das Bleiben, — Verweilen, — Sichbefinden an einem Orte, Aufenthalt* Mālatim. 152, 20. एतेषां स्वगृहे स्थितये ददौ Kathās. 13, 116. मठं च विदधे स्थित्यै देशिकानां द्विजन्मनाम् Rīgā-Tar. 6, 304. 4, 605. Kathās. 20, 22. 78, 25. Hit. ed. Johns. 1794. Sarvadarśanas. 36, 9. चिरम् Rīgā-Tar. 3, 105. अयोग्यं adj. देशः Z. d. d. m. G. 27, 83. प-योधरम् *das Verbleiben am Orte* so v. a. *das Nichterunterfallen* Spr. (II) 3736. उच्चैः पयोदानाम् 2209. गां च खं चाक्षरा R. Gorr. 2, 39, 46. mit einem loc.: रत्नोदये Uttarak. 3, 3 (5, 1). नारीं भर्तृगृहे Spr. (II) 4430. सन्मुक्तिमार्गे 5046. गर्भे 5960, v. l. पुण्ये ऽरण्ये 7228. Kathās. 59, 84. Çuk. in LA. (III) 33, 14. H. 59. गुरौ प्राणात्तिकी Kām. Nit. 2, 22. मूर्ध्नि Uttarak. 7, 2 (10, 9 = Mālatim. 160, 6). गृहे मृतस्थितिः Mārk. P. 50, 90. तव कण्ठे वाचस्य Pañāt. 1, 4, 34. अन्यस्पर्शानामविकृतानां पदान्ते Comm. zu TS. Prāt. 14, 28. असंभाव्यस्थितिं तत्र मर्यादमोजिनी-मिव Kathās. 25, 186. in comp. mit dem im loc. gedachten Worte: चित्तं Kap. 1, 59. भवः Spr. (II) 4315. स्वगृहं Kathās. 4, 26. 19, 29. Rīgā-Tar. 4, 507. AK. 2, 7, 35. Sarvadarśanas. 50, 12. स्थितिं कर्तुं *Halt machen, seinen Wohnsitz aufschlagen* Kathās. 12, 126. 15, 31. 29, 106. Rīgā-Tar. 3, 287. तुङ्गानामुपरि स्थितिभूताम् Z. d. d. m. G. 27, 62. तदभ्य-र्णकत्वं Rīgā-Tar. 1, 221. 238. गृहस्थितिं कर्तुं Kathās. 19, 43. स्थितिं प्रकृ 26, 202. 43, 57. 51, 71. भञ्ज Kathās. 24, 174 (गृहस्थितिम्). Rīgā-Tar. 1, 58. विधा 3, 530. — 3) *Niederlage, Aufbewahrung*: लिखितं Rīgā-Tar. 3, 385. सान्निहितं भर्तृधनस्थितिः *eine ohne Zeugen geschehene Ueberlieferung des Geldes des Gatten* Kathās. 4, 45. — 4) *Standort* Çat. Br. 14, 6, 10, 18. बलस्य स्वामिनश्चैव M. 7, 167. (सेनायाः) स्थितिः = शिबिर H. 746. der Fische Spr. (II) 2478. सलिलं AK. 3, 4, 10, 182. — 5) *Rang, Stellung, Würde* M. 11, 237. कुलं Jāgñ. 1, 342 (Verhältnisse St.). ब्राह्मी Bhag. 2, 72. द्युतः पुनर्विन्दति चात्मनः स्थितिम् Hariv. 11273. धैर्यात्कदाचित्स्थितिमाप्नुयात् Spr. (II) 2636. Rīgā-Tar. 1, 365. 367. — 6) *das Sichbefinden in einem Zustande, — Verhältnisse*: राज्यं *das Herrschen, Herrschaft, Regierung* Spr. (II) 6919. Rīgā-Tar. 1, 361. Pañāt. 251, 9. — 7) *das Obliegen, Hingebensein, Bedachtsein auf* (loc.): यज्ञे तपसि दाने च Bhag. 17, 27. सत्ये MBh. 1, 4165. प्रियङ्गुते 6166. धर्मे 3, 2228. R. Gorr. 2, 18, 47. — 8) *das Feststehen, Unbeweglichkeit*: eines Berges Ragh. 12, 31. दमो स्थितये विभर्ति Bhag. P. 5, 25, 13. — 9) *Beharrlichkeit, Stetigkeit* Bhag. 6, 33. Sarvadarśanas. 169, 1. 178, 18. — 10) *Bestand, Fortbestand* Çvetāçv. Up. 6, 16. शरीरं Ragh. 5, 9. कुल-स्य Kumāras. 1, 18. Vikr. 153. अमीषां जन्तूनां कतिपयनिमेषस्थितिजुषाम् Spr. (II) 525. सततं (pl.) 1317. प्राणानुबन्धं 1637. प्राणानाम् 1985. चे-ष्टानाम् 5888. जगत् Kathās. 41, 18. स्थितिः प्राप्ता ततः प्रभृति Rīgā-Tar. 4, 141. अव्ययं adj. (प्रासाद) 5, 37. धर्मस्य कुरुते स्थितिम् VP. bei Muir, ST. 4, 217. करोति °पालनम् Mārk. P. 19, 36. °प्रद 99, 28. °कर्तृ 100, 7. माउलं Bhāg. P. 5, 1, 22. Çāñ. zu Bhṣ. Ār. Up. S. 280. zu Khānd. Up. S. 35. Sarvadarśanas. 35, 5. ब्रह्मा त्वं सृष्टिकालेषु स्थितौ विष्णुरसि प्रभो। संहारे रुद्रनामासि Hariv. 14933. स्थित्युत्पत्तिविनाशानाम् R. 6,